Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics, D.B.College, Jaynagar, Madhubani.

Class:-B.A.part-1(Hons.)Date:-06-11-2020. Lecture n.-07.

Topic:- "ब्याज का आधुनिक सिद्धांत"

(Modern Theory of Interest)

ब्याज का आधुनिक सिद्धांत की व्याख्या हिक्स,-हैन्सन तथा लर्नर ने किया है जिसे नव-केन्सीय सिद्धांत (Neo Keynesian Theory) भी कहते हैं इस सिद्धांत की मुख्य विशेषता यह है कि यह सिद्धांत में ब्याज दर के निर्धारण में मौद्रिक चरों के साथ-साथ वास्तविक चरों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। इसलिए इस सिद्धांत में ब्याज दर के निर्धारण के रूप में तरलता तथा मुद्रा की पूर्ति के साथ-साथ

विनियोग तथा उपभोग जैसे वास्तविक तत्वों का प्रयोग किया गया है। अत: किसी समय में ब्याज दर का निर्धारण तरलता मुद्रा की पूर्ति विनियोग तथा उपभोग या बचत द्वारा होता है वस्तुतः इस सिद्धांत के प्रतिपादको के अनुसार बाजार को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है. प्रथम, मुद्रा बाजार(money market)तथा द्वितीय वस्तु बाजार(Commodity) I संपूर्ण बाजार में संतुलन के लिए यह आवश्यक है कि मुद्रा बाजार तथा वस्तु बाजार अलग-अलग संतुलन में हो। क्योंकि मुद्रा बाजार में मुद्रा का क्रय तथा विक्रय होता है। अतः मुद्रा बाजार उस समय संतुलन में होगा जब मुद्रा की मांग या तरलता उस समय होगा जब ब्याज की दर और आय का वह स्तर विद्यमान हो जिस पर बचत (S) और विनियोग (I) बराबर हो।

* हैंन्सन के शब्दों में “संतुलन की स्थिति तब प्राप्त होती है जब तरलता या नकद मुद्रा की मांगी जाने वाली मात्रा मुद्रा की पूर्ति के बराबर होती हैं जबकि पूंजी की सीमांत दक्षता ब्याज की दर के बराबर हो और यह सभी चर परस्पर संबंधित हो।“

ब्याज के आधुनिक सिद्धांत के अनुसार ब्याज दर का निर्धारण IS अनुसूची तथा LM अनुसूची द्वारा होता है IS अनुसूची वस्तु बाजार में बचत और विनियोग में संतुलन स्थापित करने वाले मांग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने वाले आय स्तरों को प्रदर्शित करती हैं जबकि LM वक्र मुद्रा बाजार में मुद्रा की मांग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने वाले हाय के अफसरों को प्रदर्शित करती है।

उपरोक्त बातों को पूरी तरह से स्पष्ट करने के बाद निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है की ब्याज की

संतुलन दर तब ज्ञात होगी जब मुद्रा बाजार और वस्तु बाजार साथ-साथ संतुलन में होंगे। इस सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि ब्याज की संतुलन स्तर ज्ञात करने पर आय का भी संतुलन स्तर ज्ञात हो जाता है।